ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI:UPBIL04292, REG. No.: 561/2013-2014 Vol.-1, No.-1, PP-282-284,YEAR-2013

सुमन के काव्य में सामाजिक चेतना

❑ डॉ0 प्रतिष्ठा शर्मा

5 अगस्त 1916 को झगरपुर जिला उन्नाव में जन्मे विलक्षण प्रतिभा के धनी डॉ0 शिवमंगल सिंह सुमन ओज गुण के कवि हैं। वे वामपंथ से प्रभावित हैं, इसलिये उनके काव्य में राष्ट्रीयता की अपेक्षा मानव धर्म सर्वोपरी रहा बावजूद इसके वे देश भक्ति कविताओं के कवि हैं। उन्होने हमेशा गरीब, मजूदर और निराश लोगो के मन में उत्साह जगाने वाली कविताओं की रचना की। वे गॉधीजी से प्रभावित हुये, मार्क्सवाद से भी प्रभावित हुये, आजादी की लड़ाई में चन्द्रशेखर आजाद के साथ भी रहें। इन सब के साथ वे उनके व्यक्तित्व में कट्टरता लेश मात्र भी नही दिखाई देती वे किसी एक वाद के समर्थक नही थें उन्होंने स्वयं भी कहा हैं कि–'मैं किसी विशेष चिंतनधारा या वाद से न तो अपने को जोड़ता हूँ, न जोड़ना चाहता हूँ। यदि प्रवृत्ति की दृष्टि से देखा जाये तो मैं मूलतः रोमांटिक हूँ।

उनकी यह सपाट बयान बाजी को उनकी ही कविता पर ऑखे नही भरी में इस प्रकार देखा जा सकता हैं–

सीमित उर में चिर–असीम सौन्दर्य समा न सका
बिन मुग्ध बेसुध कुरंग मन रोके नही रूका
यौं तो कहीं बार पी–पी कर जी भर गया छका
एक बिन्दु थी किन्तु कि तृष्णा नही भरी
कितनी बार तुम्हे देखा पर ऑखे नही भरी

अपने लेखन के प्रारम्भिक दौर में उन्होंने भले ही प्रणय भावना से युक्त गीतो की रचना की हैं, लेकिन बीस और तीस के दशक में उनकी लेखनी ने समाज की ज़र्जर हालत को देख कर अपनी लेखनी को समाज की ओर उन्मुख कर दिया। सुमनजी के काव्य में सामाजिक चेतना का प्रखर स्वर सुनाई देता हैं 1920 और 1930 के दशक में समाज में निम्न, मध्य और उच्च वर्ग की आर्थिक स्थितियों ने वर्ग वैषम्य को जन्म दिया यद्यपि अपने प्रारम्भिक लेखन में वे प्रेम श्रृंगार प्रणय भावना से युक्त गीतो की रचना करते रहे समाज में व्याप्त वर्ग वैषम्य ने उनकी लेखनी को समाज की और उन्मुख करने में विवश किया समाज के प्रति अपने कर्तव्य को समझते हुये कवि सुमन कहते हैं–'आज जीवन के जिन उपकरणो के बीच हमारा साहित्य दमा के मरीज के अस्वस्थ श्वास वेग के समान हॉफता–हॉफता आगे बढ़ रहा, उनके प्रति हमें अपनी जिम्मेदारियों को समझ लेना नितांत आवश्यक हो जाता हैं।'

अंग्रेजो की कूट नीति के कारण समाज में पूँजी पतियों का जन्म हुआ जिन्होंने धीरे–धीरे देश के प्रमुख उद्योग धंधो को अपने कब्जे में कर लिया यहां तक कि स्वतंत्रता के बाद भी इनका शोषण जस का तस बना रहा और ऐसे समय में जनता के द्वारा परिवर्तन की मांग करना और उस मांग को वाणी देना एक कवि का धर्म होता हैं जिसे सुमनजी ने बखूबी निभाया उन्होने अपनी कविता में गरीब, बेसहारा, शोषित वर्ग के लिये आवाज उठाई। 1936 में सुमन जी ने जब साहित्य जगत में प्रवेश किया जब से लेकर 1955 तक का काल सामान्य जनता द्वारा वर्ग विषमता की व्रीव अनुभूति का काल था। जिसके परिणाम स्वरूप ही कवि कि कविताऍं क्रांतिकारी कविताओं में परिवर्तित हुई इसी काल में साम्प्रदायिक इसी काल में साम्प्रदायिक दंगे हुये हिन्दू, मुस्लिम आपस में लड़ कर अलग हो गये और इस प्रकार राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक संघर्ष खड़े हो गये जिसे दूर करने का शंखनाद कवि ने अपनी

प्राध्यापक– हिन्दी अध्ययनशाला विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म0प्र0) भारत

कविताओं के द्वारा किया सुमनजी एक युग प्रवर्तक कवित थें वे सम्पूर्ण युग को अपने साथ लेकर चले सामाजिकता के विशेष में अपने विचार व्यक्त करते हुये वे कहते हैं–

'मैं सामाजिक कल्याण के प्रति प्रतिबद्ध हूँ गति पर विश्वास करता हूँ। मेरा मार्ग गौतम की तरह मध्यम मार्ग हैं। मैं अति को व्यवहारिक उबाल मानता हूँ, और हटधर्मिता से दूर रहना चाहता हूँ। मेरे मन में लक्ष्य साफ हैं, मेरी आगामी काव्यधारा भी लोक साधना का प्रतिरूप होगी।'

सुमनजी की सामजिक चेतना उनके प्रथम काव्य संग्रह हिल्लोल में ही जाग उठी थी और जीवन के गान में उनका सामाजिक भाव उद्दीत हो उठा उन्होंने तत्कालीन समाज व्यवस्था पर अपने मन में विषाद भरे भावो को व्यक्त करत हुये कहा–

वह कौन दुखियां आज हैं, पीड़ित समस्त समाज हैं,
सौ में अगर दस हँस लिये, क्या विश्व
हँसमुख रह सका?
कब कौन अपनी कह सका।

वे भावी समाज की कल्पना करते हुये, आक्रोश के साथ कहते हैं–

भस्मासात करू दूंगा क्षण में ऊच नीच
के सब आडम्बर,
कॉप उठेगी निर्बल जगती, सिहर उठेगा सूना अम्बर,
पाद प्रहारो से में पथ के कुश कंटक
दलता जाता हूँ।
मैं पथ पर चलता जाता हूँ।

कवि दलित वर्ग के पग से पग मिलाकर चलने की और अग्रसर होते हैं,

विस्तृत पथ हैं मेरे आगे उस पर ही
मुझको चलना हैं,
चीर शोषित असहायो के संग अत्याचारो
को दलना हैं,
साहस हो आओ तुम भी मेरा साथ निभा दो तोड़ा
अगर नही तो अब तो मैंने उस जीवन
से ही मुख मोड़ा

कवि पूंजी पतियों के विरूद्ध करारी चोट करते हुये, कहता हैं–

चूसकर जिसको निचोड़ा रक्त भी उसका न छोड़ा
वह लिये हंसिया हथोड़ कर चुका हैं शेष फन की
कील ढीली आज,
सुन रहे हो क्रांतिकारी अवाज।
वे आगे कहते हैं जर्जर कंकलो पर
वैभव का प्रासाद बसाया
भूखे मुख से कोर छीनते तू न तनिक शर्माया

इस प्रकार हंसिये और हथोड़े के बल पर कवि ने पूँजीवादी शक्ति के विरूद्ध विजय प्राप्त कर ली वे कहते हैं भीषण तोपे, बम्ब हत्यारे छीप गये कहीं मुख मोड़े से आश्चर्य विश्व कर लिया विजय हंसिये और हथोड़े से ऐसा साहित्यकार ही वास्तव में भारत की पीड़ित और शोषित जनता का सच्चा प्रतिनिधित्व कर सकता हैं देश की स्वतंत्रता तथा खुशहाली का आवाहन उनके काव्य में मिलता हैं। समुनजी को हिन्दी साहित्य के काल विभाजन में उत्तर छायावादी और प्रगतिवादी दोनों ही काल में शामिल किया गया हैं। इनके काव्य में युगीन प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता हैं। जीवन के गान, प्रलय सृजन, विश्ववास बढ़ता ही गया, हिल्लोल आदि रचनाऐ सामाजिक चेतना से ओतप्रोत हैं। समाज राष्ट्र की रीढ होता हैं। उसके महत्व व आवश्यकता पर जोर देते हुये, समुन सम्रग–''जीवन के गान'' में कवि स्वयं कहता हैं, कि ''हमे अपनी सामाजिक परिस्थितियों पर दृष्टि डालना अनिवार्य हो जाता हैं, क्योंकि किसी भी लेखक की रचना में परोक्ष अथवा अपरोक्ष रूप में उस समाज की प्रतिच्छाया जिसमें वह रह रहा हैं अवस्य पड़ती हैं।

सुमनजी की मृत्यु के बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री ने कहा, ''डॉ.शिवमंगल सिंह सुमन केवल हिन्दी कविता के क्षेत्र में एक शक्तिशाली चिन्ह ही नही थें, बल्कि वे अपने समय की सामूहिक चेतना के संरक्षक भी थें, उन्होंने न केवल अपनी भावनों का दर्ज व्यक्त किया, बल्कि युग के मुद्दो पर भी निर्भीक रचनात्मक टिप्पणी भी की थी।'' समुनजी ने हिन्दी साहित्य पर एक अमिट छाप छोड़ी हैं, वे हमेशा

समाज की बेहतरी के लिये, लेखनी चलाते रहें उनकी कविताएँ आम जनता के दर्द और आशाओं को बयां करती थी। निष्कर्षः सुमनजी के काव्य में तत्कालीन (वर्तमान) समाज की यर्थातता का चित्रण जितनी प्रखरता के साथ विद्यमान हैं वह अवर्णनीय हैं। कवि ने मजदूर वर्ग, किसान, बेसहारा, निर्धन स्त्रीयों आदि पर पर्याप्य दृष्टि पात कर उन्हें अपने काव्य में स्थान दिया। कालिदास दास की नगरी उज्जैनीय को अपनी सृजन स्थली बनाकर समुनजी ने इतिहास दोहराया है मालवा की सृजन भूमि की उर्वरा को सिद्ध किया हैं। उन्होंने इस साहित्यक एवं धार्मिक नगरी में साहित्य सरिता के कल–कल प्रवाह से साहित्य को मुखर किया सरल और सहज स्वभाव के समुनजी धार्मिक एवं आध्यात्मिक संस्कार के भी धनी थें वे नियमित गीता, रामायण, कुरान का पाठ करते थें। जो कि उनके मन की निष्कपटता को व्यक्त करता हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास –डॉ. नगेन्द्र।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।
3. साहित्य और सामाजिक संर्घ – शिव कुमार मिश्र, कला प्रकाशन दिल्ली, 1977.
4. छायावादोत्तर हिन्दी काव्य साहित्यक सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि – कमला प्रसाद पाण्डे।
5. हिन्दी साहित्य (सामाजिक चेतना)– डॉ. रत्नाकर पाण्डे 1976.
6. डॉ. शिवमंगल सुमन के काव्य में सामाजिक चेतना – डॉ.रज़िया शेख विनय प्रकाशन 2013.
7. सुमन मनुष्य और सृष्टा – प्रभाकर श्रोत्रिय।
8. जीवन के गान – डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन।
9. हिल्लोल – डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन।

*****